On the eve of World Environment Day

Chairman

Central Pollution Control Board

Cordially invites you to be present

on the occasion of staging

Hindi Drama

"CHIMNI CHOGA"

(Based on Pollution related theme)

Writer : Rajesh Jain *Director : Devendra Raj Ankur*

In the august Presence of

SMT. MANEKA GANDHI

Hon'ble Minister of State for Environment & Forests

at Sri Ram Centre for Arts & Culture

opp. Mandi House, New Delhi

on Monday, the 4th June, 1990 at 6.30 P.M.

R.S.V.P

Phones : 2217078, 2217213-16

Admit — Two

(Programme Annexed)

केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड
राजेश जैन लिखित
चिमनी-चोगा
विश्व पर्यावरण दिवस की पूर्व संध्या पर
निर्देशक - देवेन्द्र राज 'अंकुर'
दिनांक - 4 जून 1990, सायं 6:30 बजे
स्थान - श्रीराम सेंटर फॉर आर्ट एंड कल्चर,
सफदर हाशमी मार्ग, मंडी हाउस, नयी दिल्ली
रूपान्तर की प्रस्तुति
स्वच्छ वातावरण
स्वस्थ जीवन.

लेखक परिचय-राजेश जैन

उल्लेखनीय नाटक कृतियाँ :-

★ चिन्दी मास्टर (म० प्र० साहित्य परिषद द्वारा प्रकाशित)

★ चंदा खोर (टी. वी. से प्रसारित)

★ धक्का पंप (एम. के. रैना द्वारा निर्देशित)

★ नोट की चिल्लर (आकाशवाणी के राष्ट्रीय कार्यक्रम में पुरस्कृत)

लगभग अन्य पच्चीस छोटे बड़े नाटक आकाशवाणी से प्रसारित। 'रजनी' सीरियल की एक एपीसोड के रचनाकार। अन्त कृतियाँ, गोलीधूप (उपन्यास) बिके हुए संदर्भ (कथा संग्रह), बाल साहित्य की दस पुस्तकें इत्यादि।

चिमनी चोगा नाटक पर्यावरण एवं प्रदूषण पर एक सुलगते प्रश्न चिन्ह का प्रतीक समाधिक समस्या पर उल्लेखनीय प्रयास है। केन्द्रीय प्रदूषण निमन्त्रण बोर्ड के सौजन्य से "रुपान्तर" द्वारा इस नाटक का सर्वप्रथम मंचन।

सम्प्रति :- नेशनल धर्मल पावर कार्पोरेशन नई दिल्ली में डिप्टी चीफ डिजाइन इंजिनयर के पद पर कार्यरत

निर्देशक : परिचय देवेन्द्र राज अंकुर

दिल्ली विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य में एम. ए. और राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से निर्देशन में प्रशिक्षित।

आधुनिक भारतीय रंगमंच में कार्यरत युवा निर्देशकों में एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर। सन् 75 में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय रंगमंडल के साथ 'तीन एकान्त की प्रस्तुति से भारतीय रंगमंच में 'कहानी का रंगमंच जैसी नयी विधा की शुरुआत का श्रेय।

पिछले सत्रह वर्षों में देश भर की व्यावसायिक-अव्यासायिक नाट्य मंडलियों के साथ 75 कहानियों 10 उपन्यासों और 30 नाटकों का मंचन एवं अनेक रंगशिविरों का संचालन। सन् 80 से 88 के बीच राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय द्वारा श्रीनगर, रांची, कलकत्ता, शिमला, पटना, एव दिल्ली में आयोजित गहन रंगमंच-प्रशिक्षण शिविरों में प्रशिक्षक, निर्देशक एवं संचालक के रुप में भागीदारी।

सन् 78-79 में भारतेन्दु नाट्य अकादमी, लखनऊ में अतिथि प्रशिक्षक और 79 से 81 तक राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में भारतीय शास्त्रीय नाटक एवं सौन्दर्यशास्त्र के सह प्राध्यापक।

हिन्दी के अतिरिक्त बंगाली, उड़िया, कन्नड़ एवं कुमाऊंनी में भी निर्देशन का अनुभव। दिल्ली की विख्यात नाट्य मंडली 'सभव' के संस्थापक सदस्य एवं अग्रणी निर्देशक।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में इससे पूर्व 'मत्तविलास' 'स्वप्नवासवदत्ता' और 'ध्रुवस्वामिनी' की प्रस्तुति। अन्य मुख्य प्रस्तुतियाँ-'महानगर: तीन संवाद' 'महाभोज' 'डार से बिछड़ी' 'गोदान' 'अनारो' 'सत्य हरिश्चन्द्र' 'आगरा बाजार' 'उरुभंग' 'अंधेर नगरी' 'प्रेमचन्द का गाँव' 'संस्कार' 'छः बाधा जमोन' 'लौटना: बार-बार' एवं यहूदी की लड़की।

सम्प्रति राष्ट्रीय नाट्य विद्यायल में रंग-स्थापत्य के सह-प्राध्यापक साथ-साथ आधुनिक भारतीय नाटक और प्रस्तुति-प्रक्रिया का भी समानांतर प्राध्यापन।

चिमनी चोगा

कथासार

अपने जन्म-दिन पर उपहार स्वरूप मानवीयता का प्रतीक, एक हँसमुख बच्ची 'मानवी; ग्लोब के रूप में भरी-पूरी, हरी-भरी दुनिया को पाकर खुश हो जाती है उसे ग्लोब में समाये समुद्र, पहाड़ और विभिन्न नदियाँ बहुत भाते हैं।

पूँजीगत औद्योगिकता का प्रतीक 'के. पी.; मानवी का ध्यान मशीनी खिलौनों की ओर आकृष्ट करता है जिससे मानवी अपने बाल सुलभ नैसर्गिक एवं प्राकृतिक लगाव को भूलकर मशीनों की चकाचौंध से अभिभूत हो जाती है। मानवी के पिता से के. पी. एक व्यावसायिक समझौता करता है फूलों के बदले मशीन देने का व्यापार।

मंच पर असंतुलित औद्योगिक विकास के प्रतीक स्वरुप एक चिमनी खड़ी है और रबर से बना पृथ्वी का ग्लोब स्टेण्ड पर लगा है।

झाड़ू लगाने वाला जमादार चिमनी से गिरी राख को "स्नो फाल" की तरह समेटता है और टेक्नीशियन विभिन्न जानकारी देता है। पर्यावरण इतना प्रदूषित है कि लोगों के लिए हेलमेट की तरह आक्सीजन का सिलेण्डर पीठ पर लादकर चलना अनिवार्य हो जाता है। बच्चे स्कूल बैग और वाटर बाटल की तरह आक्सीजन सिलेण्डर भी साथ ले जाते हैं क्योंकि अशुद्ध हवा से कभी भी मूर्छा आने का भय होता है। पर्यावरण के असंतुलन से ईश्वर भी मनुष्य के अंगों के डिजाइन में संशोधन करने की सोचने लगता है।

भोपाल में गैस और रुस के चेरनोबिल में आण्विक रिसाव के संकेत के साथ परिणाम यह होता है कि "मानवी का ग्लोब पिचकने लगता है उसमें छेद सा हो जाता है। हवा भरने की कितनी भी वह कोशिश करती है लेकिन पृथ्वी का प्रतीक ग्लोब धीरे-धीरे पिलपिला होता जाता है।

"मानवी" की स्वस्थ सुन्दर आया-यमुना नदियों का प्रतीक भी बलात्कार का शिकार हो फटेहाल हो जाती है। मानवी दुखी हो जाती है।

आदमी की स्वार्थपरायण प्रवृतियों के कारण पृथ्वी को जैसे आंत्रशोध हो जाता हैं। कुओं से जहरीली गैसे, उथले हेण्ड-पम्पस से दूषित पानी आने लगता है। दुखी और त्रस्त होकर पेड़ भी आदमी से असहयोग करने लगते हैं और मच्छर, मक्खी, चूहा और काक्रोच से मिल जाते हैं। आक्सीजन देने वाले पेड़ स्वयं आक्सीजन के मोहताज है, मरणासन्न हैं।

बंद नालियों, झोपड़ी झुग्गी और इधर-उधर कचरा फेंकने के कारण वातावरण दूषित होने का खतरा बढ़ जाता है इससे काड़-मकोड़े खुश है उनकी अपनी शोधशालाऐ हैं जहाँ वे नई-नई बीमारियां फैलाने के लिए "कमाण्डो कीटाणु" का निर्माण करते हैं।

औद्योगिकता के प्रतिनिधि चिमनी पुत्रों के रुप में तमाम विसगतियों को प्रदिशत करते हैं उनके मुँह में सिगार की भाँति चाड़ी (कीप) लगी है जिससे बूंद-बूंद वे पेट्रोल की तरह शुद्ध हवा का राशन ग्रहण करते हैं।

कुल मिलाकर ग्लोब फुटबाल की तरह इस्तेमाल करने एवं अन्य पर्यावरण सम्बन्धी ज्यादतियों के कारण दुनिया का प्रतीक ग्लोब पंकचर हो जाता है। मानवी दुखी है। शरीर की तरह सृष्टि भी पाँच तत्वों से बनी है जल, अग्नि, वायु, आकाश और मिट्टी। उसके असंतुलन से शरीर की भांति पृथ्वी भी बीमार होने लगती है। सभी इस खतरे को महसूस करते हैं और अफसोस भी। समय का धुआं उड़ाती है नियति की चिमनी और ईधन के रुप में लोग आते-जाते हैं। स्थापित होता है कि भौतिक संस्कृति ने चिमनी को चोगे जैसा धारण कर रखा है जिसे उतारना जरुरी है। पर्यावरण अगर प्रजा है तो मनुष्य जाति राजा। राजा, प्रजा के ऊपर लदा है। दुखी प्रजा के लिए वह सब कुछ कर सकता हैं, परन्तु उससे अपना बोझ नहीं हटा सकता।

मंच पर

मानवी	... ...	बेबी शेफाली राना
पापा	... ...	अर्जुन भल्ला
के० पी०	... ...	देवेन्द्र चौपडा
मानव	... ...	अनिल कालरा
जमादार	... ...	दिनेश अहलावत
धूल धूसरित आदमी	... ...	वीरेन्द्र वर्मा
टैक्नीशियन	... ...	राज कुमार
स्कूटर वाला	... ...	विनोद पचौल
पीछेवाला	... ...	दिनेश मारग श्री शर्मा
पुलिस वाला	... ...	करन बुद्धिराजा
साथी एक	... ...	चंदन विष्ट
साथी दो	... ...	राजीव चौपडा/राजीव खोसला
साथी तीन	... ...	सत्यवान तंवर
यमुना	... ...	अनुराधा मुखर्जी
मि० खन्ना	... ...	मोहन शर्मा
मिसेज खन्ना	... ...	अनुराधा मुखर्जी
मच्छर	... ...	करन बुद्धिराजा
मक्खी	... ...	साक्षी ठाकुर
काकोच	... ...	विनोद पचौल
चूहा	... ...	दिनेश मारग श्री
अन्य	... ...	राजीव खोसला

मंच पार्श्व

मंच परिकल्पना	... ...	योगेश पंत
प्रकाश परिकल्पना	... ...	सुरेश भारद्वज
वेश भूषा प्रबन्ध	... ...	राकेश ठाकुर
वस्तु-विन्यास	... ...	योगेश पंत/अनिल कालरा
संगीत/ध्वनी	... ...	संदीप/राकेश ठाकुर
रुप सज्जा	... ...	अशोक जैन
पोस्टर/ब्रोशर	... ...	चन्द्र
मंच प्रबन्ध	... ...	मोहन शर्मा
प्रस्तुति नियन्त्रक	.. ...	अर्जुन भल्ला
सहायक निर्देशक	... ...	योगेश पंत

निर्देशक : देवेन्द्र राज अंकुर

NATIONAL HERALD: New Delhi, Wednesday, June 6, 1990

Shefali Rana as Manavi and Devendra Chopra as K. P. in Rakesh Tain's "Chimney Choga".

'Chimney Choga' a parable